IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूचना प्रौद्योगिकी आधारित अधिगम शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा नहीं करने वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

शोधकत्री
कृतिका जोशी
एपेक्स यूनिवर्सिटी जयपुर

सार:-
शिक्षा मानव के विकास की आवष्यकता है। शिक्षा से ही व्यक्तित्व का विकास होता है। शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। एक शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी करने के लिए अनेक प्रकार की तकनीकियों का प्रयोग करता है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिगम शिक्षण से देखा गया कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर सेारात्मक प्रभाव पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि जिसे भावनात्मक बुद्धि के रूप में जाना जाता हैए व्यक्तियों को अपनी क्षमताओं को पहचाननें और उन लोगों की क्षमता से है जो अलग-अलग भावनाओं के बीच में विचार करेंए उन्हे उचित रूप से ज्ञानए विचार और व्यवहार का मार्गदर्षन करने के लिए भावनात्मक सूचनाओं का प्रयोग करें और पर्यावरण के अनुकूल होने या किसी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भावनाओं को प्रबन्धित और समायोजित करें।

प्रस्तावना:-
शिक्षा मानव के विकास की आवश्यकता है। जिसके अभाव में व्यक्ति देश और समाज की गतिविधियों से अधूरा सा रह जाता है। जिसके परिणामस्वरूप वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता खोकर पिछडेपन का शिकार हो जाता है। इसलिए शिक्षा एक सशक्त साधन है जिसको प्राप्त कर व्यक्ति सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के साथ-साथ अपने जीवन की प्रगति में सहायता प्राप्त कर सकता है।

डॉ. महावीर लोढा ने शिक्षा की उपादेयता के सम्बन्ध में लिखा है - ''शिक्षा से ही व्यक्तित्व का विकास होता हैए मूल प्रवृतियों का नियन्त्रणए मार्गान्तीकरण और उदात्रीकरण होता हैए प्रौढ जीवन की तैयारी होती हैए सामाजिक भावना का विकास होता है। शिक्षा व्यावसायिक कुषलता उत्पन्न करती हैए भौतिक सम्पन्नता प्रदान करती है। आत्मनिर्भर बनाती हैए अनुभव का पुनर्निर्माण करती हैए कार्यक्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती हैए नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित करती है।''[1]

वैज्ञानिक आविष्कारों ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं क्रिया को प्रभावित किया है। इससे हमारी शिक्षा भी अछूती नहीं रह सकी। शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। एक शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी कराने के लिए अनेक प्रकार की तकनीकियों का प्रयोग करता है। यदि शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाना चाहता है तो उसे नवीन तकनीकियों का कक्षा-कक्ष में प्रयोग करना होगा। शिक्षा के क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से तकनीकी का प्रयोग सर्वप्रथम खिलौने के विकास में किया गया। आधुनिक तकनीकी का प्रयोग शिक्षा में 1926 ई. में अमेरिका के ओहियो के एक विष्वविद्यालय में सिडनी प्रेसी नामक व्यक्ति की यांत्रिक शिक्षण मषीन से माना जाता है। लम्सडैन ग्लेजर आदि ने सन् 1930.40 के मध्य विषिष्ट प्रकार की पुस्तकों तथा कार्डोंए बोर्डों का प्रयोग अधिगम में बोध सुगमता लाने हेतु की।

वैश्विक तकनीकी शब्द का इंग्लैण्ड में सर्वप्रथम प्रयोग ब्राइनमर प्रतिवेदन में हुआ।

हालाँकि शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी का प्रयोग तो हो गया लेकिन कुशल प्रशिक्षित शिक्षकों के अभाव में इसका सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के शैक्षिक क्षेत्र पर पडता नजर नहीं आया।

डॉ. धनश्याम शर्माए जगदीश चन्द्र शर्मा के अनुसार ''हमनें अनुभव किया है कि तकनीकि कक्षा में कार्य करनें वाले शिक्षक किसी प्रकार का प्रशिक्षण नही ले पाते है इससे उनकी शिक्षण दक्षता प्रभावित होती है तथा इससे अध्ययनरत विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि पर भी बुरा प्रभाव पडता है।''[2]

हालाँंकि शिक्षा में प्रौद्योगिकी एक डिजिटल मंच प्रदान करती है और ये आजकल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। विद्यालय स्मार्ट कक्षाओं के नये टशन के साथ चल रहें है और ये स्मार्ट कक्षाऐं प्रौद्योगिकी का सबसे बेहतर उदाहरण है। इसका बालक के व्यवहार में कृत्य परिवर्तन लाना है। आज विज्ञान के युग में वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी नें मानव जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया है शिक्षाए शिक्षण और अधिगम भी बहुत प्रभावित हुए है।

ब्रिटिश संस्थान ऑफकॉम की रिपोर्ट नें खुलासा किया है कि ''बच्चों और किषोरों में स्प्लिट स्क्रीनिंग की प्रवृति बढनें से उनके फोकस करनें की क्षमता बढ़ रही है।''[3]

शिक्षण क्रिया से विद्यार्थी में सोचने समझनेए चिन्तन करनेए तर्क करनेंए तुलना करनेए प्रयोग करने आदि शक्तियों का विकास सम्भव होता है। इन सबका प्रभाव सबसे अधिक बुद्धि पर पडता है। जैसा कि हम अक्सर अनुभव करतें है कि एक ही कक्षा में सभी विद्यार्थियों का बुद्धि स्तर एक समान नहीं होता है। उनमें किसी न किसी रूप में अन्तर अवष्य होता है। हर विद्यार्थी के अन्दर अनेक प्रकार के बुद्धि के स्तर पाए जाते है। जिनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्तर भावनात्मक बुद्धि का होता हैए जिसके द्वारा विद्यार्थी में अपनें काम को सही प्रकार से करनें की सोच विकसित होती है।

सांवेगिक बृद्धि जिसे भावनात्मक भागफल और भावनात्मक बृद्धि के रूप में भी जाना जाता हैए व्यक्तियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने और उन लोगों की क्षमता से हैए जो अलग अलग भावनाओं के बीच में विचार करेए उन्हे उचित रूप से ज्ञानए विचार और व्यवहार को मार्गदर्षन करने के लिए भावनात्मक सूचनाओं का प्रयोग करे और पर्यावरण के अनुकूल होने या किसी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भावनाओं को प्रबन्धित और समायोजित करें। सांवेगिक बुद्धि को अपने स्वयं की और अन्य लोगों की भावनाओं पर नजर रखनें की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ताकि विभिन्न भावनाओं के बीच भेद हो सके और उन्हे उचित रूप से जाना जा सके और सोचए व्यवहार को मार्गदर्षन करने के लिए भावनात्मक जानकारी का प्रयोग किया जा सकें। शिक्षा भावनात्मक बुद्धिए सहानुभूति और भावनाओं को जोडने के लिए क्षमताओं को प्रतिबिम्बित करती है ताकि समझ को बढाया जा सके।

एडवर्ड थार्नडाइक ने ''सांवेगिक बुद्धि को व्यक्ति को समझने तथा उसके प्रतिव्यवहार करने की योग्यता के रूप में माना है।''[4]

इंगलिश तथा इंगलिश (1958द्ध के अनुसार ''संवेग एक जटिल भाव की अवस्था होती है। जिसमें
कुछ खास - खास षारीरिक व ग्रन्थीयां क्रियाएं होती है।''[5]

किसी की संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य उसकी उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपनें तथा दूसरों के संवेगों को जाननेए समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करनें में उसकी सहायता करती है।

संवेगात्मक बुद्धि की पहचान को इतिहास की दृष्टि से देखा जाए तो इसका प्रयोग सर्वप्रथम प्रोफेसर डॉ जॉन मेयर तथा पोटर सेलोने अमेरिकन प्रोफेसरों ने 1990 में किया था। जिससे लोगों की संवेगात्मक क्षेत्र में विद्यमान वैयक्तिक योग्यताओं में विभेदीकरण किया जा सके। परन्तु इसकी वैज्ञानिक एवं सैद्धान्तिक व्याख्या का श्रेय दि न्यू टाइम्स के पत्रकार से मनोवैज्ञानिक बने डेनियल गोलमैन को जाता है। इन्होनें अपनी पुस्तक ११ संवेगात्मक बुद्धिः बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों ११;म्उवजपवदंस प्दजमससपहमदबमरू ॅील पज बंद उंजजमत जींद प्फण्द्ध के माध्यम से इसे विषेष चर्चा का विषय बनाया।

शोधकत्री ने इन तमाम परिस्थितियों का अवलोकन करते हुए विचार किया कि क्या सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा नहीं करनें वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर पाया जाता है६ क्या इन छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर पाया जाता है ६ इनका उत्तर जानने का प्रयास शोधकत्री ने इस शोधप्रायोजना कार्य में किया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः-

रश्मि गोरे (2019द्ध ने ११ सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन ११ में पाया कि ११सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों में सांवेगिक बुद्धि की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

सामान्य वर्ग की छात्राओं तथा अनुसूचित जाति वर्गकी छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में अन्तर पाया गया। सामान्य वर्ग की छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि अनुसूचित जाति वर्ग की छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि की अपेक्षा अधिक पायी गयी। सामान्य वर्ग के छात्रों तथा अनुसूचित जाति वर्ग की छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में अन्तर पाया गया। सामान्य वर्ग के छात्रों की सांवेगिक बुद्धि अनुसूचित जाति वर्ग के छात्रों की सांवेगिक बुद्धि की अपेक्षा अधिक पायी गयी।११ 6

कुमारी अमृता (2020द्ध ने ११उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन ११ प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि ११लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है जबकि गैर सरकारी एवं सरकारी विद्यालय के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। माध्यम तथा शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। पिता एवं माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि विद्यालय के प्रकार तथा अभिभावकों की शिक्षा से प्रभावित होती है।११ 7

दीपक सिंहए गुन्जन शर्मा (2019द्ध ११स्वाध्याय का किशोरियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता पर प्रभाव का अध्ययन११ मे शोधकार्य कर पाया कि स्वाध्याय का किशोरियों की संवेगात्मक बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि विभिन्न पहलुओं के प्रति एक दृष्टिकोण एवं ज्ञान को विकसित करनें में सहायता प्रदान करती है। 8

सिंह डॉ. अमन सिसोदियाए मेहरा नवीन कुमार (2022द्ध ने ११ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शरीर द्रव्यमान सूचकांक पर योग के प्रभाव का अध्ययन११ अध्ययन में पाया गया कि जोधपुर संभाग के माध्यमिक स्तर के छात्रों का बीएमआई छात्राओं से अधिक पाया गया। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में से छात्राएं संवेगात्मक दृष्टि से अधिक परिपक्व पायी गयी। 9

उद्देष्यः-

1ण्उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा नहीं करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2ण्उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा नहीं करने वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3ण्उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करने वाली तथा नहीं करने वाली छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः-

1ण्उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करनें वाले एवं नही करनें वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नही होता है।

2ण्उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करनें वाले एवं नही करनें वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नही होता है।

3ण्उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करनें वाली एवं नही करनें वाली छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नही होता है।

परिसीमनः-

1ण्शोध कार्य उच्च माध्यमिक स्तर के 11 वीं के विद्यार्थियों तक सीमित रहेगी।

2ण्शोध कार्य में बारां जिले से न्यादर्श का चयन किया जायेगा।

3ण्शोधकार्य में 60 विद्यार्थी(30 छात्र एवं 30 छात्राऐं) सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करने वाले चयनित किए जायेगें। 60 विद्यार्थी (30 छात्र एवं 30 छात्राऐं) सामान्य शिक्षण विधि से शिक्षण प्राप्त करनें वाले चयनित किए जायेंगे। ये विद्यार्थी कला संकाय से चयनित किए जायेंगे।

न्यादर्शः-

बुद्धि लब्धिए सामाजिक आर्थिक स्तर तथा आयु को नियन्त्रित कर अर्थात बुद्धि लब्धिए समान सामाजिक आर्थिक स्तर तथा लगभग एक आयु के 110 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया जाएगा। उक्त चरों को नियन्त्रित करने हेतु सामाजिक आर्थिक स्तर बीना शाहए बुद्धि लब्धि हेतु आर. के. ओझा मापनी का प्रयोग किया गया है।

उपचारः-

60 विधार्थियों (30 छात्र एवं 30 छात्राएं) को सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से 15 दिन शिक्षण कार्य करवाया गया तथा 60 विद्यार्थियों को (30 छात्र एवं 30 छात्राएं) को सामान्य शिक्षण विधि से शिक्षण कार्य करवाया गया।

उपकरणः-

मापनी	निर्माता
सांवेगिक बुद्धि मापनी 2014	डॉ. ए. के. सिंह

संख्यिकी विश्लेशणः-

सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त एवं नही प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि मापनी पूर्व एवं पश्च जांच के प्राप्तांको के मध्यमानए प्रमापविचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना

सारणी 1

विद्यार्थी	मापनी	संख्या	मध्यमान	प्रमापविचलन	क्रान्तिक मान		सार्थकता स्तर
					ण्01	ण्05	
सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षण प्राप्त विद्यार्थी	पूर्व जांच	60	17ण्83	5ण्735	1ण्202		सार्थक नही है।
सामान्य विधि से शिक्षण प्राप्त विद्यार्थी	पूर्व जांच	60	16ण्69	4ण्588			
सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षण प्राप्त विद्यार्थी	पश्च जांच	60	21ण्4	4ण्516	12ण्487		सार्थक है।
सामान्य विधि से शिक्षण प्राप्त विद्यार्थी	पश्च जांच	60	11ण्75	3ण्937			

सारणी संख्या 1 में सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा नहीं प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि मापनी के प्राप्तांको का मध्यमानए प्रमापविचलन एवं क्रांन्तिक मान की गणना की गई है। जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों का मध्यमानए प्रमापविचलन पूर्व एवं पश्च जांच में क्रमषः 17ण्83ए 5ण्735 ;पूर्व) 21ण्4ए 4ण्516;पश्च) पाया गया। सामान्य विधि से शिक्षण प्राप्त का 16ण्69ए 4ण्588 पाया गया। क्रान्तिक मान क्रमषः 1ण्202ए 12ण्487 पाया गया। अर्थात् पूर्व में जांच अनुसार शैक्षिक सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण प्रक्रिया से शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा नही करनें वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि मापनी के प्राप्तांको के आधार पर क्रान्तिक मान 1ण्202 प्राप्त हुआ जो कि 0ण्01 तथा 0ण्05 दोनो स्तरो पर सार्थक नहीं है अर्थात् इन की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नही है। सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण के पश्चात शिक्षण प्राप्त करने वाले तथा नही करने वालों के पश्च जांच के प्राप्तांको के आधार पर क्रान्तिक मान 12ण्487 पाया गया जो कि दोनों सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अर्थात् सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि सामान्य शिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।

सारणी 2

विद्यार्थी	मापनी	संख्या	मध्यमान	प्रमापविचलन	क्रान्तिक मान		सार्थकता स्तर
					ण्01	ण्05	
सूचना प्रौद्योगिकी अधिगम शिक्षण प्राप्त छात्र	पूर्व जांच	30	9ण्833	3ण्285	0ण्252		सार्थक नही है।
सामान्य शिक्षण प्राप्त छात्र	पूर्व जांच	30	9ण्66	3ण्484			
सूचना प्रौद्योगिकी अधिगम शिक्षण प्राप्त छात्र	पश्च जांच	30	21ण्66	13ण्570	2ण्64		सार्थक है।
सामान्य शिक्षण प्राप्त छात्र	पश्च जांच	30	12ण्66	12ण्767			

निष्कर्ष:-

1ण् सूचना प्रौद्योगिकी अधिगम शिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि सामान्य विधि द्वारा शिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि से उच्च पाई गई अर्थात् संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर पाया गया।

2ण् सूचना प्रौद्योगिकी अधिगम शिक्षण प्राप्त तथा सामान्य शिक्षण प्राप्त छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर पाया गया। सूचना प्रौधोगिक अधिगम शिक्षण प्राप्त छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि सामान्य विधि शिक्षण के छात्रों से अधिक पाई गई।

3ण् सूचना प्रौद्योगिकी अधिगम शिक्षण प्राप्त तथा सामान्य शिक्षण प्राप्त छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नहीं पाया गया। सूचना प्रौधोगिक अधिगम शिक्षण प्राप्त छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि सामान्य विधि शिक्षण के छात्राओं के समान पाई गई।

उपयोगिता:-

उक्त शोध शिक्षा जगत में एक दिषा प्रदान करने का कार्य करेगा। शिक्षण क्षेत्र में यह उपयोगी है। शिक्षक को सूचना प्रौधागिकी अधिगम शिक्षण के उपयोग हेतु प्रेरणा स्त्रोत बनेगा। विद्यालय प्रबन्धकोंए शिक्षाषास्त्रीयों को भी सूचना प्रौद्योगिकी अधिगम शिक्षण सम्बन्धी सामग्री विद्यालयों में प्रदान करने हेतु प्रेरित करेगा।

सन्दर्भ सूची:-

1. लोढ़ा डॉ महावीर मल '' नैतिक शिक्षा'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007, पृ.स. 11
2. अक्षरवर्त इन्टरनेषनल रिसर्च जर्नल (रविवार 12 जनवरी 2020)
3. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, षुक्रवार, 31 मार्च 2023, पृ.स. 26
4. payn,WI(1983/1986) 'a Study of emotion; Developing.Emotional inttegence; Self integration Relation to fear, Pain and Desire. Dissertation Abstracts International, 47 P 203 A(University Microfilms NO AAC _ 8605928)
5. Abjankari.in.2021/6/ संवेगात्मक विकास अर्थ,परिभाषा .....।
6. Periodic research may 2019 v017
7. Journal of research in Education 2020
8. Interdisciplinary international Journal (2019)
   International Journal of physical education, Sports and health(2022)